डॉ जीतेंद्र कुमार होता
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
भूगोल विभाग, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ : कृषि

छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान या प्रदेश का प्रमुख व्यवसाय कृषि हैं, जिसमें 70 प्रतिशत जनसंख्या संलग्न है। राज्य में 58040 वर्ग कि.मी. (42.93प्रतिशत) में कृषि किया जाता है। जिसका 80 प्रतिशत खाद्यान्न फसल, 20 प्रतिशत अखाद्य तथा अन्य फसलों का उत्पादन होता है। राज्य में खरीफ, रबी एवं जायद फसलें उगाई जाती हैं। यहां कुल कृषि क्षेत्र का 67.46 प्रतिशत में धान का उत्पादन होता है, इसलिए धान का कटोरा कहा जाता है। लगभग 20% खेती योग्य क्षेत्र पर रबी फसल के रूप में गेहूँ उगाया जाता है।

छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था और रोजगार में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 25% योगदान देती है। राज्य का कुल खेती योग्य क्षेत्र 4.78 मिलियन हेक्टेयर है, जो इसके कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 35% है। शुद्ध सिंचित क्षेत्र खेती योग्य क्षेत्र का 23% है, जिसमें लाल और पीली मिट्टी प्रमुख प्रकार की मिट्टी हैं। छत्तीसगढ़ में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें चावल, गेहूं, बाजरा, दालें और तिलहन हैं। बाजरा, दलहन और तिलहन भी महत्वपूर्ण फसलें हैं, और छोटे क्षेत्रों में उगाई जाती हैं। छत्तीसगढ़ में कृषि को जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी और मिट्टी के क्षरण सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हालाँकि, राज्य सरकार इन चुनौतियों से निपटने और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने के लिए कदम उठा रही है। छत्तीसगढ़ को कृषि भूमि उपयोग एवं उत्पादन के आधार पर मुख्यतः– छत्तीसगढ़ का मैदान, बस्तर का पठार, उत्तरी मैदानी, प्रदेश में विभाजित किया गया है।

छत्तीसगढ़ का मैदान–

छत्तीसगढ का लगभग 50% क्षेत्रफल मैदान वाला क्षेत्र है इस क्षेत्र में कृषि से अधिक विकसित क्षेत्र माना जाता है,मुख्य रूप से गेहूं, अलसी,सरसों, तिल, मूंगफली, अरहर, धान, चना, मूंग, सोयाबीन, फसल आदि का उत्पादन क्षेत्र होता है। यह क्षेत्र राजनंदगांव, बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, रायगढ, महासमुंद, कवर्धा, धमतरी, कोरबा एवं कांकेर जिला आते हैं।

बस्तर का पठार–

छत्तीसगढ़ का कुल भौगोलिक क्षेत्र लगभग 28.62% क्षेत्र है यहां चावल, गेहूं, कोदो, कुटकी, रागी, मक्का आदि का उत्पादन अधिक होता है। इसके अंतर्गत बस्तर एवं दंतेवाड़ा जिले को शामिल किया जाता है।

उत्तरी मैदानी प्रदेश–

छत्तीसगढ़ का कुल भौगोलिक क्षेत्र लगभग 20.86% क्षेत्र है। उत्तरी भाग में स्थित इस क्षेत्र में धान गेहूं अरहर की मूंगफली सरसों कोदो कुटकी का उत्पादन होता है।यह क्षेत्र में कोरिया जयपुर सरगुजा जिला आता है।

छत्तीसगढ़ राज्य की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या का जीवन यापन के लिए कृषि पर निर्भर है। प्रदेश के 37.46 लाख कृषक परिवारों में से 76 प्रतिशत लघु एवं सीमांत श्रेणी में आते है वर्तमान में प्रदेश के सभी सिंचाई स्त्रोतों से लगभग 36 प्रतिशत क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध है, जिसमें से सर्वाधिक 52 प्रतिशत क्षेत्र जलाशयों/नहरों के माध्यम से सिंचित है एवं 29 प्रतिशत क्षेत्र नलकूप से सुनिश्चित सिंचाई के अंतर्गत आते हैं। कृषि अधिकांशतः वर्षा पर निर्भर है प्रदेश की लगभग 55 प्रतिशत काश्त भूमि की जलधारण क्षमता कम होने के कारण, बिना सिंचाई साधन के दूसरी फसल लेना संभव नहीं है। प्रदेश को सर्वाधिक खाद्यान्न उत्पादन की श्रेणी में राष्ट्रीय कृषि कर्मण प्रथम पुरस्कार राशि रू. 5.00 करोड़ से 5 फरवरी, 2020 को सम्मानित किया गया।

राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा

राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 2014 से राज्य पोषित जैविक खेती मिशन एवं वर्ष 2016 से केन्द्र प्रवर्तित परंपरागत कृषि विकास योजना संचालित है। पूर्व में योजनाओं का क्रियान्वयन 05 जिलों में शुरू किया गया। वर्तमान में इन योजनाओं का विस्तार समस्त जिलों में करते हुए 05 जिले गरियाबंद, बीजापुर, सुकमा, दंतेवाड़ा एवं नारायणपुर को पूर्ण जैविक जिला एवं शेष 22 जिलों के एक–एक विकासखंड को पूर्ण जैविक बनाने हेतु कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। जैविक खेती मिशन अंतर्गत वर्ष 2019–20 में 10,990 एकड़ एवं परंपरागत कृषि विकास योजना में 50,000 एकड़ में फसल प्रदर्शन का आयोजन किया गया वर्ष 2020–21 में जैविक खेती मिशन का 7.290 एकड़ में तथा परम्परागत कृषि विकास योजना का 50,000 एकड़ में क्रियान्वयन कर कुल 57.290 एकड़ क्षेत्र में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जैविक फसलें– राज्य में धान की सुगंधित किस्में बासमती, बादशाह भोग, दुबराज, पुसा सुगंध, जवाफूल, मोतीचुर, जीराफूल, तुलसी–मंजरी, काली कमोद, लोक्टीमांछी, कालीगिलास, तिलकरतुरी, मक्का एवं लघु धान्य फसलें–कोदो–कुटकी, रागी, सांया, कोसरा आदि एवं दलहन–तिलहन फसलें अरहर, उड़द, मूंग, कुल्थी, तिल की जैविक खेती की जा रही है।

चावल– छत्तीसगढ़ में खरीफ सीजन 2024 में कुल 144.92 लाख टन धान की रिकॉर्ड खरीदी गई है। राज्य के 24 लाख 72 हजार 310 किसानों ने सरकार को समर्थन मूल्य पर धान बेचा है। यह राज्य की मुख्य फसल है, सर्वाधिक उत्पादन होता है। प्रदेश में कुल कृषि योग्य भूमि के 67% भाग में चावल की खेती होती है। राज्य के लगभग 36 लाख हेक्टेयर भूमि पर चावल की खेती होती है। चावल की फसल वर्षा ऋतु के आरम्भ में बोई जाती है। छत्तीसगढ़ में चावल मुख्यतः मैदानी भागों में अधिक होता है। इसके क्षेत्र हैं, दुर्ग, जांजगीर–चाँपा, रायपुर, बिलासपुर, राजनान्दगाँव, कोरबा, सरगुजा राज्य में चावल का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 2,160 किग्रा है।

गेहूं – छत्तीसगढ़ में गेहूं के अन्तर्गत कम क्षेत्रफल का मुख्य कारण शीतकाल में सिंचाई की सुविधाओं की कमी है । कांकेर ,कोयलाबेड़ा , सामरी तहसीलों में गेहूँ के अन्तर्गत कुल भूमि का 1% या कुछ है। कोण्टा, बीजापुर , दन्तेवाड़ा तहसीलों में गेहूं

की खेती नगण्य है। इसके पश्चात् क्रमशः दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, राजनान्दगाँव, रायगढ़ तथा बस्तर का स्थान है। अन्य फसलों की तुलना में गेहूँ के उत्पादन में यहाँ वर्ष प्रतिवर्ष काफी परिवर्तन देखा जाता है। यहाँ इसका कुल उत्पादन 85908.89 मीट्रिक टन है।

कोदो–कुटकी – कोदो–कुटकी मोटे अनाज की फसल है धान के पश्चात् राज्य की दूसरी प्रमुख उपज है। इसे गरीबों का अनाज कहा जाता है।विगत वर्ष में 1.11 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में यह फसल बोई गई थी। सरगुजा इसका सर्वाधिक उत्पादक जिला है।यहाँ धान क्षेत्र तुलनात्मक रूप से कम है। वहाँ कोदो–कुटकी उत्पादन कुछ अधिक है। अति अल्प उत्पादकता के कारण इसकी खेती बहुत लाभप्रद नही है लेकिन कृषि से बहुत अनुपजाउ भूमि का उपयोग हो पाता है।

अरहर – यह एक प्रमुख दलहन फसल है । इस फसल को जुलाई – अगस्त में बोया जाता है तथा मार्च–अप्रैल में काटा जाता है। इसे वर्षा के आरम्भ में कपास एवं ज्वार के साथ बोया जाता है। इस फसल के साथ ज्वार और कपास फसल बोई जाती ह छत्तीसगढ़ में औसत उत्पादकता से अधिक उत्पादकता वाले इस दलहन फसल का कुल उत्पादन यहां 53680.13 मीट्रिक टन है।

ज्वार– ज्वार खरीफ एवं रबी दोनों की फसल है, लेकिन ज्वार का खरीफ क्षेत्र अधिक है। यह जून–जुलाई में बोई जाती है एवं सितम्बर–अक्टूबर में काट ली जाती है। छत्तीसगढ़ में इस मोटे अनाज का कुल उत्पादन 8590.20 मीट्रिक टन है। संभाग स्तर पर सबसे अधिक उत्पादन 4972.67 मीट्रिक टन है। इसकी कृषि को प्रोत्साहित करके उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

मक्का– यह प्रदेश के सभी हिस्सों में बहुत छोटे पैमाने पर उगाई जाती है । अक्सर किसान अपनी बाड़ियों में इसकी फसल बोते हैं। सरगुजा, बस्तर , दन्तेवाड़ा ,कोरिया , जशपुर , कोरबा , बिलासपुर आदि प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं। जनजातीय क्षेत्र में प्रमुखता वाले इस मोटे अनाज का छत्तीसगढ़ में उत्पादन 73440.21 मीट्रिक टन है। मानसून की अनिश्चितता का व्यापक प्रभाव देखा जाता है, सांथ ही रासायनिक उर्वरकों और शंकर मक्का के प्रयोग से यहां इसका उत्पादन में काफी वृद्धि की जा सकती है।

कपास– छत्तीसगढ़ में कपास का उत्पादन नहीं होता, यद्यपि दन्तेवाड़ा , बस्तर , सरगुजा एवं धमतरी जिलों में अत्यल्प क्षेत्र में इसकी खेती की जा रही है। केन्द्रीय पोषित सघन कपास विकास कार्यक्रम जगदलपुर, दन्तेवाड़ा और कांकेर जिलों में चलाया जा रहा है ।

गन्ना– राज्य में गन्ने की खेती यदा – कदा की जाती है । राजनान्दगाँव, कबीरधाम, दुर्ग, रायपुर तथा इसके आसपास के क्षेत्रों में गन्ने की खेती की जाती है। सरगुजा, रायगढ़ , बस्तर तथा बिलासपुर जिलों में इसकी खेती होती है। गन्ने की खेती राज्य के 2,000 हेक्टेयर क्षेत्र में की जाती है राज्य के रायगढ़ में शक्कर मिल की स्थापना प्रस्तावित है ।

उड़द– दलहन में चने के बाद उड़द का दूसरा स्थान है। इसके उत्पादन में अग्रणी जिले रायगढ़ , कोरबा , धमतरी एवं महासमुन्द हैं , जबकि आवश्यकतानुसार यह सभी जिलों में उड़द बोई जाती है।

सन (जूट) तथा मेस्टा सन तथा मेस्टा का उत्पादन केवल रायगढ़ में होता है , क्योंकि यहाँ इस राज्य की एकमात्र जूट मिल स्थापित हैं।

सनई –इसका उत्पादन केवल रायगढ़ जिले में होता है, जो यहाँ की जूट मिलों के लिए जूट के विकल्प के रूप में विकसित किया जा रहा है।

सरसों –सरसों राज्य की प्रमुख तिलहन फसलों में से एक है, सरसों की भाजी व फल का यहाँ विशेष महत्त्व है। मौसम की प्रतिकुलता के प्रभाव से इसका उत्पादन घटता–बढ़ता रहता है। छ.ग. में इसका कुल उत्पादन 20905.54 मीट्रिक टन होता है। जिले स्तर पर सबसे अधिक उत्पादन धमतरी जिले में 3061.54 मीट्रिक टन तथा सबसे कम महासमुंद में 77.09 मीट्रिक टन उत्पादित होता है।

अलसी– यह राज्य की परम्परागत एवं अति संवेदशील तिलहन फसल है, जिसका उपयोग प्राचीन समय से यहाँ के लोग खाद्य तेल के रूप में करते हैं। प्रदेश में यह उत्तरा फसल के रूप में बोई जाती है। अलसी सम्पूर्ण प्रदेश की सर्वाधिक लोकप्रिय तिलहन है। यहॉ इसका औसत कुल उत्पादन 10905.02 मीट्रिक टन होता है। इसका सर्वाधिक उत्पादन रायपुर संभाग में 6512.91 मीट्रिक टन तथा न्यूनतम उत्पादन बस्तर संभाग में 427.60 मीट्रिक टन है। जिले स्तर पर धमतरी में सर्वाधिक 2337.08 मीट्रिक टन तथा सबसे कम महासमुंद में 65.09 मीट्रिक टन है।

चना–चना का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र दुर्ग, कबीरधाम, बिलासपुर, राजनान्दगॉव, रायपुर इत्यादि हैं। मौसम की प्रतिकूलता से प्रभावित होने वाली इस फसल की छत्तीसगढ़ में औसत उत्पादन 10654.61 मीट्रिक टन है। जिले स्तर पर सबसे अधिक दुर्ग में 3843. 16 मीट्रिक टन तथा सबसे कम दंतेवाड़ा में मात्र 0.96 मीट्रिक टन उत्पादन हुआ है।

मूंगफली –यह प्रदेश में रायगढ़ , महासमुन्द , सरगुजा , बिलासपुर ,जांजगीर – चाँपा तथा रायपुर जिलों में मुख्यतः बोई जाती है । मूंगफली का उपयोग तेल एवं भोज्य पदार्थ दोनों के लिए किया जाता है। राज्य की महत्वपूर्ण तिलहन फसल मूंगफली का यहां औसत कुल उत्पादन 31476.34 मीट्रिक टन है। अधिक उत्पादन 9924.12 मीट्रिक टन रायगढ. जिले में तथा सबसे कम धमतरी में 19.97 मीट्रिक टन है।

सोयाबीन

छत्तीसगढ़ में इसका कुल उत्पादन 13544.85 मीट्रिक टन होता है। सबसे अधिक सोयाबीन उत्पादन 4502.65 मीट्रिक टन दुर्ग जिले में तथा सबसे कम कोरिया जिले में 3.69 मीट्रिक टन टन होता

रामतिल

छत्तीसगढ़ में इस तिलहन फसल का कुल औसत उत्पादन 3023.4 मीट्रिक टन है इसका सबसे अधिक उत्पादन सरगुजा में 528.69 मीट्रिक टन तथा सबसे कम जशपुर जिले में मात्र 36.13 मीट्रिक टन प्रतिवेदित हुआ हैं। मौसम की दशाओं तथा बीमारियों से उत्पादन प्रभावित होता है।

उद्यानिकी फसलें– छत्तीसगढ में बागवानी के क्षेत्र में सर्वाधिक जोर दिया जा रहा है। आम, केला, अमरूद तथा अन्य फलों और विभिन्न प्रकार की सब्जियों को बढ़ाने के लिए यहाँ की जलवायु उपयुक्त है। कृषि फसलों की तुलना में उद्यानिकी फसलों के उच्च मूल्य होने के कारण उद्यानिकी फसलों की लोकप्रियता बढ़ रही है। राज्य के सिंचाई संसाधनों को बढ़ावा देने और राज्य में विशेष रूप से उद्यानिकी फसलों को बढ़ावा देने विशेष प्रोत्साहन की जरूरत है। राज्य में बागवानी की स्थिति पर एक संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है, राज्य में बागवानी फसलों पर व्यवस्थित डेटा संग्रह के माध्यम से सांख्यिकीय आंकड़ों को तैयार करने एवं संकलन करने के लिए नए प्रयास किये जा रहे हैं।

अ. फल फसल – छत्तीसगढ़ राज्य में उगाई जाने वाली प्रमुख फल फसलें हैं आम, अमरूद, नींबू, लीची, काजू, अखरोट, चीकू इत्यादि है। इन प्रमुख फल फसलों के अलावा सीताफल, बेल, बेर, आंवला आदि हैं। राज्य में वर्ष 2022–23 में फल फसलों

का कुल क्षेत्रफल 2,55,848 उत्पादन 35,18,843 मीट्रिक टन हैं। राज्य के पूरे हिस्से में आम का उत्पादन किया जा सकता है जबकि सरूगुजा और जशपुर जिले के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र लीची के उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं। बस्तर और रायगढ़ जिले के पठार क्षेत्र में काजू को अच्छी तरह से उगाया जा सकता है।

ब. सब्जियां – ज्यादातर सब्जी फसलों जैसे सोलानेसी फसलों, कुकुर्बिट्स, बीन्स, गोभी, फूलगोभी आदि राज्य में बहुत अच्छी तरह उगाए जाते हैं। राज्य में वर्ष 2022–23 में सब्जी फसलों का कुल क्षेत्र 4,98,953 हेक्टेयर तथा उत्पादन 68,92,501 मीट्रिक टन हैं।

स. मसाले – मिर्च, अदरक, लहसुन, हल्दी, धनिया और मेथी राज्य में उगने वाले प्रमुख मसाले हैं। वर्ष 2022–23 में मसाले का कुल क्षेत्रफल 67,702 तथा उत्पादन 4,53,604 मीट्रिक टन हैं।

ड. फूल– छत्तीसगढ़ फूलों की खेती के क्षेत्र में क्षेत्र नगण्य है। नए राज्य के गठन के साथ फूलों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए किसानों के बीच वाणिज्यिक फूलों की खेती को बढ़ावा देना आवश्यक है। मैरी–गोल्ड, ट्युबोरोज, ग्लैडीओलस, रोज्स, गैलेर्डिया, क्रिसमसम, ऑर्किड इत्यादि जैसे प्रमुख फूल बिना बहुत सावधानी के बहुत अच्छी तरह से उगाए जा सकते हैं। राज्य में फूलों की खेती का रकबा वर्ष 2022–23 में 13,638 हेक्टेयर तथा उत्पादन 3,34,672 मीट्रिक टन है।

ई. सुगंध और औषधीय पौधे– राज्य में औषधीय में अश्वगंधा, सर्पगंधा, सतवार, बुच, आओला, तिखुर एवं सुगंधित फसलों जैसे कि लेमनग्रास, पामारोजा, जमारोजा, पचौली, शामिल है। वर्ष 2022–23 में सुगन्धित और औषधीय फसलों का रकबा 6,607 हेक्टेयर तथा उत्पादन 46,173 मीट्रिक टन है।